<u>विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय</u>

<u>वर्ग- नवम्</u>

<u>विषय -हिन्दी</u>

<u>।। पुनरावृत्ति ।।</u>

<u>कल की कक्षा में लघुकथा लेखन के अंतर्गत कुछ नियमों को दिया गया था , निश्चित ही आपने ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा । आज शेष नियम दिए जा रहे हैं । आप उन नियमों को पढ़ें और दिए गये संकेत-चिन्ह के आधार पर लघुकथा लिखें ।</u>

कहानी की सहायता या आधार पर कहानी लिखना -

मूल कहानी को ध्यान से पढ़कर कहानी लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि कहानी को खूब ध्यान से पढ़ा जाए, उसकी प्रमुख बातों या चरित्रों या घटनाओं को अलग कागज पर संकेत-रूप

में लिख लिया जाए और फिर अपनी भाषा में मूल कहानी को इस तरह लिखा जाए कि कोई भी महत्त्वपूर्ण बात या घटना या प्रसंग छूटने न पाए। इस प्रकार की कहानी लिखते समय छात्रों को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

(i) कहानी का आरम्भ आकर्षक ढंग से हो

(ii) संवाद छोटे-छोटे हों

(iii) कहानी का क्रमिक विकास हो(iv) उसका अन्त स्वाभाविक हो

(v) कहानी का शीर्षक मूल कहानी का शीर्षक हो

(vi) भाषा सरल और सुबोध हो।

इनके आधार पर छात्रों से कहानी लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

(2) रूपरेखा (संकेतों) के सहारे कहानी लिखना -

रूपरेखा या दिए गये संकेतों के आधार पर कहानी लिखना कठिन भी है, सरल भी। कठिन इसलिए कि संकेत अधूरे होते हैं। इसके लिए कल्पना और मानसिक व्यायाम करने की आवश्यकता पड़ती है। सरल इसलिए कि कहानी के संकेत पहले से दिए रहते हैं। यहाँ केवल खानापुरी करनी होती है। लेकिन, इस प्रकार की कहानी लिखने के लिए कल्पना से अधिक काम लेना पड़ता है। ऐसी कहानी लिखने में वे ही छात्र अपनी क्षमता का परिचय दे सकते है, जिनमें सर्जनात्मक और कल्पनात्मक शक्ति अधिक होती है। इसके लिए छात्र को संवेदनशील और कल्पनाप्रवण होना चाहिए। एक उदाहरण इस प्रकार है-

गृहकार्य

संकेत-चिन्ह

एक किसान के लड़के लड़ते, किसान मरने के निकट, सबको बुलाया, लकड़ियों को तोड़ने को दिया, किसी से न टूटा, एक-एक कर लकड़ियों तोड़ी, शिक्षा। उपर्युक्त संकेतों को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जाएगी-